ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 141-143**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

स्वाधीनता संघर्ष में महिलाओं की सहभागिता पर गाँधीजी का प्रभाव

डॉ० अशोक कुमार

एम०ए०, पी–एच०डी० – समाजशास्त्र, ग्राम–निगरी टोला मनिपर, पो०+थाना–डोभी, गया (बिहार) भारत

Received-26.04.2025, Revised-04.05.2025, Accepted-10.05.2025 E-mail : aaryvart2013@gmail.com

सारांशः भारतीय नारी के आत्मबलिदानी स्वभाव के बारे में गांधी की संस्तुति कोई मौलिक नहीं थी क्योंकि उसकी प्रशंसा पहले ही समाज सुधारकों तथा पुनरुत्थानवादियों द्वारा की जा चुकी थी। वस्तुतः उन्होंने नारी स्वभाव का पुनरूपण ही किया। समाज सुधारकों ने जहाँ स्त्री की आत्मबलिदानी प्रकृति को सांस्कारिक दबावों के चलते कष्टप्रद रूप में देखा वहीं पुनरुत्थानवादियों ने महिलाओं के संस्कारात्मक बलिदान को हिंदू स्त्री के गौरव की संज्ञा दी, परंतु गांधी ने स्त्री के आत्मबलिदानी स्वभाव को हिंदू संस्कारों से इतर माँ के रूप में भारतीय स्त्रीत्व के विशेष गुणों को परिभाषित किया। गांधी की दृष्टि में स्त्रियों द्वारा शांति और अहिंसा के प्रसार के लिए उनकी गर्भधारण एवं मातृत्व का अनुभव ही विशेष योग्यता है। अगर वे प्रसव की वेदना सह सकती हैं तो वे कुछ भी सह सकती हैं, कोई भी कष्ट उठा सकती हैं।

कुंजीभूत शब्द– स्वाधीनता संघर्ष, सहभागिता, आत्मबलिदानी स्वभाव, संस्तुति, मौलिक, पुनरुत्थान, संसकारिक दबाव।

आमतौर पर ऐसा माना जाता है कि स्वाधीनता संघर्ष में स्त्रियों की बढ़ती सहभागिता गांधी जी के प्रभाव के कारण थी। अब तक गांधी जी एक युग पुरुष बन चुके थे और जिन क्षेत्रों का दौरा उन्होंने कभी नहीं किया था वहाँ भी लोग उनके नाम से परिचित हो चुके थे। उद्धारक के रूप में उनके आगमन की अफवाहों से तहलका मच जाता। गांधी जी के बारे में लोगों की भावनाएँ किस हद तक उपरी, इसे मारग्रेट कूजिंस के निम्नलिखित वृत्तान्त में देखा जा सकता है। कूजिंस के अनुसार– सफेद बालों वाली एक दृढ़ एवं शिक्षित खेतिहर वृद्धा अपनी अधेड़ उम्र की बेटी के साथ एक दिन अप्रत्याशित रूप से हमारे जेल के राजनीतिक गुट में आई। उन्होंने अपनी दास्तान सुनाते हुए कहा कि उन्होंने अपने मर्द से सुना है कि स्वराज आंदोलन चलाने वाले गांधी जी खुद भी जेल में हैं। वृद्धा ने कहा कि इतना सुनते ही हम दोनों ने आपस में चर्चा की कि अगर गांधी जी जेल में हैं तो आओ हम भी वहीं चलें!" उन्होंने दूसरे दिन अपने मर्द के खेतों में जाने का इंतजार किया और जैसे ही वह घर से निकला हम दोनों ने मंदिर में जाकर भगवान की पूजा की तथा सात किलोमीटर की दूरी पर स्थित सबसे नजदीकी कस्बे तक पैदल चलकर विदेशी कपड़ों की एक दुकान का घेराव किया एवं गिरफ्तारी दी। उन्हें संतोष तभी हुआ जब वे जेल में सलाखों के पीछे पहुँच गईं।[1]

स्त्रियों की जुझारू क्षमता की ओर गांधी जी का ध्यान तब गया, जब वे दक्षिण अफ्रीका में थे। उन्होंने महसूस किया कि उनके राजनीतिक विचारों का महिलाओं द्वारा व्यापक समर्थन किया गया। गांधी जी के नेतृत्व में छिड़े संघर्ष में स्त्रियाँ जेल गईं, कठोर कारावास की सजा भुगती परंतु फिर भी कोई शिकायत नहीं की। गांधी जी के अनुसार, उनके सत्याग्रह की अवधारणा के विकास के दो प्रमुख आयाम थे। पहला तो उनकी पत्नी कस्तूरबा और दूसरा दक्षिण अफ्रीका की काली औरतें। कस्तूरबा एक दृढ़ इच्छाशक्तिवाली महिला थीं, जिसे मैंने अपने प्रारंभिक दिनों में महत्त्व न देकर भूल की, लेकिन उनकी उसी दृढ़ इच्छाशक्ति ने अनजाने ही उन्हें असहयोग आंदोलन की कला का मेरा गुरु बना दिया। इसकी शुरुआत मेरे अपने परिवार से ही हुई। जब मैंने सन् 1906 में इसे राजनीतिक क्षेत्र में शुरू किया तो, यह सत्याग्रह वृहद नाम से जाना गया।[2] बिना हैरानी के यह जानना दिलचस्प होगा कि जिस तरह की अपेक्षा उनकी कस्तूरबा से थी वैसी अपेक्षा होने या किए जाने की उम्मीद वे उस समय किसी और से नहीं करते थे।

गांधी ने कहा कि दक्षिणी अफ्रीका के सत्याग्रह आंदोलन में स्त्रियों की सहभागिता ने उन्हें (गांधी को) महिलाओं की आत्मबलिदानी एवं कष्ट सहन करने की असाधारण क्षमताओं का अहसास कराया। आनेवाले वर्षों में गांधी जी ने महिलाओं के अनिवार्य रूप से आत्मबलिदानी स्वभाव को एक सिद्धांत के रूप में प्रतिपादित किया जो कि नैतिक सिद्धांतों के आधार पर अहिंसक युद्ध के लिए सर्वाधिक उपयुक्त था ।

मैंने इन कॉलमों में सुझाव दिया है कि स्त्री अहिंसा का अवतार है अहिंसा का अर्थ है, अपरिमित प्यार जिसका दूसरा अर्थ है पीड़ा सहने की असीम क्षमता। स्त्री, पुरुष की माँ के अलावा इतना बड़ा कष्ट सहने की क्षमता भला और किस में दिखाई पड़ती है? अपनी इस क्षमता का प्रदर्शन यह नौ महीने तक गर्भ में शिशु को रखने तथा उसे पालने में आनंद का अनुभव करती है... आइए हम उसके प्यार को संपूर्ण मानवता की ओर स्थानांतरित करने दें, उसे यह भूल जाने दें कि वह कभी पुरुष की वासना की शिकार थी या कि हो सकती है। तभी वह पुरुष के साथ उसकी माँ, निर्मात्री तथा मूक नेता होने का गौरवशाली दर्जा प्राप्त कर सकती है। आइए हम शांति के मकरंद की तलाश में युद्धरत विश्व को, स्त्री को शांति का पाठ पढ़ाने दें। वह सत्याग्रह की अगुआ बन सकती है और इसके लिए उसे कोई किताब पढ़ने की जरूरत नहीं है, परंतु एक साहसिक हृदय की आवश्यकता जरूर है, जो कि कष्ट उठाने तथा निष्ठा से बनता है।[3]

भारतीय नारी के आत्मबलिदानी स्वभाव के बारे में गांधी की संस्तुति कोई मौलिक नहीं थी, क्योंकि उसकी प्रशंसा पहले ही समाज सुधारकों तथा पुनरुत्थानवादियों द्वारा की जा चुकी थी । वस्तुतः उन्होंने नारी स्वभाव का पुनरूपण ही किया। समाज सुधारकों ने जहाँ स्त्री की आत्मबलिदानी प्रकृति को सांस्कारिक दबावों के चलते कष्टप्रद रूप में देखा वहीं पुनरुत्थानवादियों ने महिलाओं के संस्कारात्मक बलिदान को हिंदू स्त्री के गौरव की संज्ञा दी, परंतु गांधी ने स्त्री के आत्मबलिदानी स्वभाव को हिंदू संस्कारों से इतर माँ के रूप में भारतीय स्त्रीत्व के विशेष गुणों को परिभाषित किया। गांधी की दृष्टि में स्त्रियों द्वारा शांति और अहिंसा के प्रसार के लिए उनकी गर्भधारण एवं मातृत्व का अनुभव ही विशेष योग्यता है। अगर वे प्रसव की वेदना सह सकती हैं तो, वे कुछ भी सह सकती हैं, कोई भी कष्ट उठा सकती हैं।

गांधी के अनुसार, स्त्री–पुरुष के मध्य जैविक भिन्नता जहाँ उनके पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व का निर्धारण करती है, वहीं इसका आशय यह भी है कि दोनों अलग–अलग भूमिकाओं के लिए पैदा हुए हैं। ये भूमिकाएँ सदिच्छात्मक एवं समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। पुरुष की भूमिका जहाँ जीविकोंपार्जन की थी, वहीं स्त्री की भूमिका गृहिणी एवं माँ के रूप में थी। पहले से जारी मातृत्व के गुणों और भूमिकाओं की बहस और उसके नियमों का गांधी ने यहाँ फिर पुनरूपायन किया। गर्मपंथियों तथा पुनरुत्थानवादियों ने जहाँ माँ की छवि को एक प्रताड़ित, जुल्म की शिकार अबला (विदेशी आक्रांताओं के जुल्म की शिकार भारतमाता) तथा माँ को वीर रक्षिका (माँ

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

काली) के रूप में प्रस्तुत किया, वहीं सुधारवादी, राष्ट्रवादी नारीवादियों ने माँ की छवि को पालक, समाजनिष्ठ एवं पुरुषों की समर्थक के रूप में पेश किया, गांधी ने माँ की छवि की रचना आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों के समृद्ध भंडार तथा पुरुषों के गुरु के रूप में की। स्त्रियों की दशा सुधारने की पूर्ववर्ती दलीलों के पीछे सोच यह थी, कि भारतीय स्त्रियाँ पिछड़ी, नादान तथा आमतौर पर असंतुष्ट हैं। दूसरी ओर गांधी जी ने भारतीय नारी की योग्यता की न केवल प्रशंसा की बल्कि यह भी कहा कि हमें उनसे सीखना चाहिए क्योंकि ऐसे अनेक कार्य हैं जो केवल स्त्रियाँ ही कर सकती हैं। ध्यान देने योग्य बात यह है कि गांधी ने न केवल भारतीय स्त्रियों के बारे में ये विचार व्यक्त किए बल्कि उन्होंने पश्चिमी औरतों, मिसाल के तौर पर अमेरिकी महिलाओं से भी कहा कि अभी उन्हें (अमेरिकी महिलाओं के) भारत की पवित्र सुशील तथा अहिंसक स्त्रियों से बहुत कुछ सीखना चाहिए। उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश उपनिवेशवाद का सशक्त विरोध कर सकनेवाले राष्ट्रीय व्यक्तित्व की खोज में गांधी जी ने राजनीतिक तौर–तरीकों को भारतीयता खासतौर से स्त्रियों (उदाहरणार्थ– सत्याग्रह) की ओर मोड़ दिया।

गांधी जी पर एक विचारपूर्ण लेख में मधु किश्वर ने इसका उल्लेख किया है कि उन्होंने सार्वजनिक जीवन में महिलाओं को ऊँचा स्थान दिया, उनमें नया आत्मविश्वास जगाया और नया आत्मविचार यह कहते हुए पैदा किया कि "स्त्रियाँ उदासीनता त्यागकर सुधार के सकारात्मक उद्देश्य की ध्वजवाहिका बन गई हैं।'[4] यहाँ इस बात को जरूर मानना पड़ेगा कि स्त्रियों के बारे में ये विचार गांधी जी ने उस समय व्यक्त किए जब उन्होंने (स्त्रियों ने) न केवल सार्वजनिक व्यावसायिक क्षेत्रों में डॉक्टरों, अध्यापिकाओं एवं समाज सेविकाओं के रूप में सम्मान अर्जित करना शुरू कर दिया था बल्कि किसान–मजदूर आंदोलन जैसे राष्ट्रवादी एवं सुधारवादी आंदोलनों में शामिल होकर सार्वजनिक राजनीतिक ख्याति भी प्राप्त की। यहाँ मेरा इरादा स्त्री आंदोलन में गांधी की भूमिका के महत्त्व को कम करके आँकना नहीं है, गांधी का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान यह था कि उन्होंने सार्वजनिक गतिविधियों में महिलाओं की सहभागिता के औचित्य को सिद्ध करते हुए उसे विस्तार दिया ताकि वे वर्ग एवं सांस्कृतिक बंधनों को तोड़कर आगे बढ़ सकें। इसी समय महिलाओं के स्वभाव और भूमिका के बारे में गांधी की परिभाषा हिंदू पितृसत्ता से गहराई से जुड़ी हुई नजर आई और अक्सर उनका झुकाव महिला आंदोलनों को आगे बढ़ाने के बजाए उन्हें सीमित करने की ओर रहना। यद्यपि गांधी जी बताते हैं कि दक्षिण अफ्रीकी सत्याग्रहों में स्त्रियों की गुणवत्ता को देखकर वे हैरान रह गए। उन्होंने कहा कि मेरे ऊपर राष्ट्रवादी स्त्रियों की ओर से कई वर्षों से लगातार दबाव पड़ रहा था कि मैं स्त्रियों को सार्वजनिक अभियानों में शामिल होने की अपील जारी करूँ। प्रारंभिक वर्षों में गांधी ने स्त्रियों की 'विशेष भूमिका' घर में बताई – एक ओर जहाँ उन्होंने परिवार को सामाजिक परिवर्तन का उद्गमस्थल बताते हुए घर के निजी क्षेत्र को सार्वजनिक गतिविधियों की ओर मोड़ा वहीं दूसरी ओर उन्होंने यह बात साफ कर दी कि सार्वजनिक गतिविधियों के क्षेत्र में स्त्रियों की भूमिका का और अधिक विस्तार गलत होगा। मिसाल के तौर पर उन्होंने कहा कि स्वदेशी आंदोलन में स्त्रियों की भूमिका एक प्रकार से गृह–आधारित ही थी क्योंकि इसमें महिलाओं को ख चलाना तथा मात्र यह देखना होता था कि उसका परिवार खादी पहने। ष्स्वदेशी का संकल्प तब तक पूरा नहीं हो सकता जब तक उसमें स्त्रियाँ सहायता न करें। केवल पुरुष इस मामले में कुछ नहीं कर सकता। बच्चों पर उनका कोई नियंत्रण नहीं होता, बच्चों को कपड़े पहनाने का काम औरतों का है इसलिए यह आवश्यक है स्त्रियाँ स्वेदशी की भावना से ओतप्रोत हों ।'5

1920 के दशक के अंतिम दिनों में गांधी ने अपने स्वर में परिवर्तन करते हुए महिलाओं को घर से निकलकर नागरिक अवज्ञा आंदोलन में शामिल होने की अपील की, किंतु उन्होंने उनकी सहभागिता को विदेशी दवाओं, शराब की दुकानों की घेराबंदी करने तक सीमित कर दिया, क्योंकि गांधीजी की नजर में स्त्रियों को यह कार्य स्वाभाविक रूप से फबता था, इसलिए नहीं कि शराब की दुकानों की वजह से महिलाएँ अपने पतियों की नशाखोरी से त्रस्त थीं, बल्कि इसलिए भी कि यह निजी जीवन में नैतिकता एवं शुचिता का मुद्दा था। नमक के मुद्दे को अँग्रेजों के शासन में भारतीयों द्वारा झेली जानेवाली आर्थिक कठिनाइयों के प्रतीक के रूप में लिया गया। चूँकि यह सार्वजनिक जीवन से जुड़ा मुद्दा था इसलिए इसे औरतों द्वारा उठाया जाना ठीक नहीं था, अगर कुछ राष्ट्रवादी महिलाओं ने इस द्वैत (भेदभाव) का विरोध किया तो अन्य स्त्रियों ने महिला घेराव समिति का स्वागत भी किया। हंसा मेहता की दृष्टि में, महिलाओं को स्वदेशी के समर्थन में घर में रहने की पुरानी सोच में बदलाव लाते हुए स्त्रियों को गलियों में निकलकर घेराव करने के लिए प्रेरित करना पूर्ण स्वराज की दिशा में उठाया गया कदम था।[6] वास्तविकता यह है कि समस्त–महिला घेराव टुकड़ियों की रणनीति सबसे पहले श्रमिक आंदोलन के तहत सन् 1928–29 में बंबई की कपड़ा मिलों में हुई आम हड़ताल के दौरान अपनाई गई। कम्युनिस्ट ट्रेड यूनियन नेताओं ने मिलों के मुख्य द्वारों पर महिला घेराव टुकड़ियाँ इसलिए तैनात करने का निर्णय लिया, तॉकि कोई सिरफिरा अगर मिल में प्रवेश का प्रयास करे तो उसे रोका जा सके। ऐसा पाया गया कि उस समय बहुत कम ही गुमराह श्रमिक महिलाओं के तानों का सामना कर सके, क्योंकि महिलाएँ अक्सर उनके पुरुषत्व को निशाना बनाती थीं। इसके अलावा एक प्रमुख कारण यह भी था कि पुलिस उन दिनों स्त्रियों के साथ हाथापाई करने में उदारता बरतती थी। हमने देखा कि यह प्रारंभिक उदारता बहुत जल्द समाप्त हो गई।

सन् 1930 के दशक तक गांधी के दृष्टिकोण में उल्लेखनीय परिवर्तन आया । उनकी इच्छा थी कि वे कमला देवी के अनुरोध को स्वीकार करते हुए स्त्रियों से नमक सत्याग्रह में शामिल होने की अपील करें। 1930 के दशक के मध्य में नागरिक अवज्ञा आंदोलन में स्त्रियों की भूमिका की गांधी जी ने सराहना की। गांधी जी ने कहारू "भारतीय स्त्रियों ने परदा फाड़कर फेंक दिया और राष्ट्र के काम के लिए बाहर आ गईं। उन्होंने महसूस किया कि देश उनकी घरेलू देखभाल की जिम्मेदारी के अलावा कुछ और अधिक करने की माँग कर रहा था....[7] गांधी जी ने देखा कि स्त्रियाँ उनकी अहिंसक लड़ाई में निकटता से उनकी नीतियों का अनुसरण कर रही हैं, क्योंकि यह बड़े पैमाने पर कष्ट उठाने का आह्वान था और महिलाओं के अलावा इतनी ईमानदारी से यह कष्ट और कौन उठा सकता था?[8] गांधी जी का यह दृष्टिकोण समय की माँग और स्त्री के गुणों के अनुरूप था क्योंकि गांधी के विचारों के केंद्र में पीड़ा थी रू उनकी आदर्श कार्यकर्ता 'स्वैच्छिक विधवा' थी जो कि 'मानवता के लिए एक उपहार' थी क्योंकि उसने कष्ट उठाने में खुशी हासिल करने का सबक सीख रखा था ।'गांधी की निगाह में वही असली सती थी न कि वह स्त्री जो अपने पति की चिता में जल जाए'

'हमारे पूर्वजों ने सती के उल्लेख में जो विवरण दिया था वह आज भी प्रासंगिक है। उनकी व्याख्या के अनुसार सती वह स्त्री है, जो हमेशा अपने पति से ही प्यार करे और उसके प्रति निष्ठावान रहे, पति के जीवन में स्वयं को उसकी निःस्वार्थ सेवा में समर्पित कर दे तथा उसकी मृत्यु के बाद भी मन, वचन एवं कर्म से पूरी तरह पवित्र रहे...। अपने सतीत्व का प्रमाण वह औरत नहीं दे सकती जो अपने पति की मृत्यु के पश्चात उसकी चिता की अग्नि में कूद कर भस्म हो जाए, बल्कि सतीत्व का प्रमाण वह स्त्री दे सकती है जो विवाह मंडप में सप्तपदी के सात फेरों में बँधने तथा पति की डोली में बैठने के बाद अपने प्यार, बलिदान, आत्मबेहलन

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

के माध्यम से अपने पति, उसके परिवार तथा राष्ट्र के प्रति अपने समर्पण का परिचय दे और अपनी पहचान को पूर्णरूपेण अपने पति के साथ व्यक्त करे, ऐसी औरत संपूर्ण विश्व में अपनी पहचान कायम करना सीख जाती है।[9]

ऐसी किसी भी स्त्री को, जो मन, वचन तथा कर्म से पवित्र न हो, गांधी के आंदोलन में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जाती थी। सन् 1925 में बंगाल काँग्रेस समिति ने जब वेश्याओं को अपने झंडे तले संगठित किया, तो गांधी जी गुस्से से लगभग पागल हो गए। उन औरतों को गरीबों की सहायता करने, सेवा तथा खादी कताई एवं बुनाई जैसे गांधीवादी 'मानवीय' कार्य करने के लिए कहा गया। गांधी जी की नजर में वेश्याओं द्वारा किया गया ऐसा कार्य धूल– राख के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था, क्योंकि उन्होंने अभी तक वेश्यावृत्ति के जरिए पैसा कमाने का काम नहीं छोड़ा था। अपने को सुधार कर संन्यासिनियों की भाँति जीवन व्यतीत करने से पूर्व इन वेश्याओं को 'मानवीय कार्यों' में लगाने के विचार को गांधी जी द्वारा 'अश्लील' बताया गया जिन्होंने कहा कि इन औरतों की संगत तो 'चोरों के साथ से भी बुरी है, क्योंकि ये समाज की शुचिता का हरण करती हैं। उन्हें तभी स्वीकार किया जा सकता है, जब वे अहम् त्यागकर कष्ट सहने तथा चरखा एवं खादी के जरिए अपना सुधार करने के लिए तैयार हों।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मारग्रेट कूगिंग की पुस्तक ए इंडियन वूमनहुड टुडेश्श, किताबिस्तान, 1947, पृष्ठ–65.
2. 100 इयर्स ऑफ दि हिंदूश पृष्ठ–65.
3. एम०के० गाँधी, श्वीमेन एंड सोशल इनजस्टिसश, अहमदाबाद, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, 1954, पृष्ठ–26–27.
4. मधु किश्वर, रीडिंग इन दि वीमेंस मूवमेंट–1 श्गोष्ठी में बंबई में साइक्लोस्टाइल करके बाँटा गया, पृष्ठ–09.
5. तथैव पृष्ठ–11.
6. तथैव पृष्ठ–13.
7. एम०के० गाँधी, पूवोक्त पृष्ठ–18–19.
8. तथैव
9. तथैव पृष्ठ–119–20
10. मधु किश्वर, पूर्वोक्त पृष्ठ–7.

*****